बाल विज्ञान
द्वितीय-भाग

रचयिता
संकलन-सम्पादन
प्रज्ञा श्रमण मुनि अमितसागर

प्रकाशक
श्री धर्मश्रुत शोध संस्थान,
श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर नसिया जी
कोटला रोड़, फिरोजाबाद (उ०प्र०)

कृति–बाल विज्ञान, द्वितीय-भाग, पुष्प संख्या - सप्तम

कृतिकार - प्रज्ञा श्रमण मुनि अमितसागर

पावन प्रसंग - बीसवीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैन आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर जी महाराज के तृतीय पट्टाधीश आचार्य शिरोमणि श्री धर्मसागर जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष १९१३-२०१४ के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

[पुस्तक प्राप्ति स्थान]

१. चन्द्रा कापी हाऊस, हास्पिटल रोड, आगरा (उ0 प्र0)

२. वास्ट जैन फाउण्डेशन ५९/२ बिरहाना रोड़ , कानपुर (उ0 प्र0)
मो0 : 09451875448

३. आलोक जैन, हनुमानगंज
c/o श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर नसिया जी, कोटला रोड़,
फिरोजाबाद (उ0 प्र0) मो0: 09997543415

४. आचार्य श्री शिवसागर ग्रन्थमाला, श्री शान्तिवीर नगर,
श्री महावीर जी, जि0 करौली (राज0)

५. श्री दि0 जैन अष्टापद तीर्थ, विलासपुर चौक, धारूहेड़ा,
गुडगांव (हरि0) मो0: 09312837240

६. आर्ष ग्रन्थालय, जैन बाग, सहारनपुर (उ0 प्र0)
मो0: 09410874703

७. विशुद्ध ग्रन्थालय, सर्वऋतु विलास, उदयपुर (राजस्थान)

कम्पोजिंग - वर्धमान कम्प्युटर, फिरोजाबाद (यू0पी0)

संशोधित संस्करण -प्रथम; सन् २०१४,

प्रतियाँ - २०००

मूल्य - १५ रूपये

मुद्रक - चन्द्रा कापी हाऊस, आगरा (उ0 प्र0) मो0 : 09412260879

बाल विज्ञान
भाग २

महामंत्र णमोकार विशेष

प्रश्न १ - णमोकार मंत्र अनादि-निधन क्यों है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र में नमस्करणीय पाँचों परमेष्ठियों का अस्तित्व त्रैकालिक (भूत-भविष्य-वर्तमान) है, अतः उनके नमस्कार सूचक यह मंत्र भी (त्रैकालिक) अनादि - निधन है ।

प्रश्न २ - णमोकार मंत्र को सबसे पहले किस ग्रन्थ में लिपिबद्ध किया गया ?

उत्तर - णमोकार मंत्र को सबसे पहले षट्खण्डागम ग्रन्थ में मंगलाचरण के रूप में लिपिबद्ध किया गया ।

प्रश्न ३ - षट्खण्डागम ग्रन्थ के रचयिता कौन थे और कब हुए ?

उत्तर - षट्खण्डागम ग्रन्थ के रचयिता आचार्य पुष्पदन्त एवं भूतबलि हैं, जो कुन्द-कुन्दाचार्य से भी पहले हुए थे ।

प्रश्न ४ - शुद्ध णमोकार मंत्र को कितनी श्वांसोच्छवास में पढ़ा जाता है, प्रयोग बताओ ?

उत्तर - शुद्ध णमोकार मंत्र को तीन श्वांसोच्छवास में पढ़ा जाता है ।

प्रयोग -

णमो अरिहंताणं में श्वांस लेना,

णमो सिद्धाणं में श्वांस छोड़ना ।

णमो आयरियाणं में श्वांस लेना,
णमो उवज्झायाणं में श्वांस छोड़ना ।
णमो लोए - में श्वांस लेना,
सव्व साहूणं में श्वांस छोड़ना ।

प्रश्न ५ - णमोकार मंत्र को कितने प्रकार से पढ़ सकते हैं ?

उत्तर - णमोकार मंत्र को तीन प्रकार से पढ़ सकते हैं -

(१) क्रम से - णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

(२) विपरीत क्रम से - णमो लोए सव्वसाहूणं, णमो उवज्झायाणं, णमो आइरियाणं, णमो सिद्धाणं, णमो अरिहंताणं ।

(३) यथातथाक्रम से - णमो उवज्झायाणं, णमो आइरियाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं ।

प्रश्न ६ - विपरीत या यथातथा क्रम से णमोकार मंत्र पढ़ने से क्या कोई दोष नहीं लगता ?

उत्तर - नहीं; जिस प्रकार मिश्री की डली कहीं से भी खाओ; स्वाद मीठा ही होता है, उसी प्रकार णमोकार मंत्र कैसे भी पढ़ो उसका कोई दोष नहीं लगता ।

प्रश्न ७ - विपरीत या यथा-तथा क्रम से णमोकार मंत्र पढ़ने से क्या लाभ है ?

उत्तर - विपरीत या यथा-तथा क्रम से णमोकार मंत्र पढ़ने से मन की भटकन रुकती है तथा भावों में विशुद्धि बढ़ती है , मनचाहा कार्य सफल होता है ।

प्रश्न ८ - कहीं - कहीं ''णमो'' की जगह ''नमो'' शब्द (पाठ) लिखा रहता है, अतः कौन-सा शब्द (पाठ) सही है ?

उत्तर - ''णमो'' शब्द (पाठ) ही सही है, क्योंकि ''नमो'' शब्द (पाठ)

संस्कृत भाषा का है और "णमो" शब्द (पाठ) प्राकृत भाषा का है ।

प्रश्न ९ - कहीं - कहीं "अरिहंताणं" के स्थान पर "अरहंताणं" और "आइरियाणं" के स्थान पर "आयरियाणं" शब्द (पाठ) मिलता है, चारों में सही कौन - कौन से हैं ?

उत्तर - चारों ही शब्द (पाठ) सही हैं, क्योंकि प्राकृत भाषा में चारों ही शब्द (पाठ) बनते हैं तथा मूल अर्थ में भी कोई अन्तर नहीं हैं ।

प्रश्न १० - णमोकार मंत्र में "ॐ" या "श्री" लगाने से क्या होता है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र में "ॐ" या "श्री" लगाने से मूल मंत्र के अक्षर एवं मात्राएँ अधिक हो जाती हैं ।

प्रश्न ११ - णमोकार मंत्र से ॐ कैसे बनता है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र के पाँचों परमेष्ठियों के प्रथम - प्रथम अक्षर से सन्धि द्वारा ॐ की सिद्धि होती है । प्रयोग -

अरिहंत का	- अ
सिद्ध अर्थात् अशरीरि का	- अ
आचार्य का	- आ
उपाध्याय का	- उ
साधू अर्थात् मुनि का	- म्

इस प्रकार - अ+अ+ आ=आ+उ=ओ+म् = ओम्

प्रश्न १२ - णमोकार मंत्र को हाथ की अंगुलियों पर किस प्रकार गिना जा सकता है ?

उत्तर - दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुलि के बीच वाले पोरे पर; अंगुष्ठ द्वारा गिनते हुए तर्जनी अंगुली के ऊपरी पोरे से गिनते हुए;

नीचे की ओर आकर मध्यमा अंगुली के नीचे पोरे पर गिनते हुए, अनामिका अंगुली के नीचे पोरे से गिनते हुए, ऊपर वाले पोरे पर पूर्ण करना चाहिए ।

प्रश्न १३ - इस प्रकार अंगुलियों पर णमोकार मंत्र क्यों गिना जाता है ?

उत्तर - इस प्रकार अंगुलियों पर णमोकार मंत्र गिनने से प्राचीन लिपि का ॐ (७) अंगुलियों पर बन जाता है ।

प्रश्न १४ - णमोकार मंत्र कब - कब पढ़ सकते हैं ?

उत्तर - णमोकार मंत्र सार्वकालिक, सार्वभौमिक मंत्र है अर्थात् उठते - बैठते, खाते - पीते, चलते - फिरते, सोते - जागते णमोकार मंत्र पढ़ सकते हैं; स्मरण कर सकते हैं । महिलायें अशुद्धि (M.C.) के समय में मन ही मन णमोकार मंत्र का स्मरण कर सकती हैं ।

प्रश्न १५ - इस प्रकार णमोकार मंत्र पढ़ने से क्या लाभ है ?

उत्तर - इस प्रकार णमोकार मंत्र पढ़ने से शारीरिक एवं मानसिक रोग नष्ट हो जाते हैं, दैविक संकट एवं दुर्गति भी टल जाती है, इच्छित कार्य की सिद्धि हो जाती है ।

प्रश्न १६ - इस णमोकार मंत्र की क्या विशेषता है ?

उत्तर - इस णमोकार मंत्र में किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार नहीं किया गया है, जिन्होंने अपनी सच्ची साधना से अपने जीवन को पाप रहित कर लिया है; कर रहे हैं और आगे भी करेगें, उन्हें नमस्कार किया है, अतः णमोकार मंत्र त्रैकालिक मंत्र है ।

प्रश्न १७ - णमोकार मंत्र को कितने नामों से जाना जा सकता है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र को महामंत्र, नमस्कार मंत्र, नवकार मंत्र, अपराजित मंत्र, मूल मंत्र, मंत्रराज, अनादि-निधन मंत्र, मंगल

मंत्र, सार्वकालिक मंत्र, सार्वभौमिक मंत्र, त्रैकालिक मंत्र, परमेष्ठी मंत्र आदि अनेक नामों से जाना जा सकता है।

प्रश्न १८ - णमोकार मंत्र से क्या अन्य मंत्रों की भी उत्पत्ति होती है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र से चौरासी लाख मंत्रों की उत्पत्ति होती है।

प्रश्न १९ - णमोकार मंत्र के पाँच पद, पैंतीस अक्षर एवं अट्ठावन मात्रायें अलग - अलग गिनाओ ?

उत्तर -

		पद	अक्षर	मात्रायें
णमो	**अरिहंताणं**			
। ऽ	। । ऽ ऽ ऽ	प्रथम	७	११
णमो	सिद्धाणं			
। ऽ	। ऽ ऽ	द्वितीय	५	८
णमो	आइरियाणं			
। ऽ	ऽ । । ऽ ऽ	तृतीय	७	११
णमो	उवज्झायाणं			
। ऽ	ऽ । ऽ ऽ ऽ	चतुर्थ	७	१२
णमो	लोए सव्व साहूणं			
। ऽ	ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ	पंचम	९	१६
	कुल	५ पद;	३५ अक्षर;	५८ मात्रायें

(१) **नोट** - मात्रा की गिनती के लिये लघु मात्रा हेतु (**।**); दीर्घ मात्रा हेतु (**ऽ**) का चिन्ह लगाना चाहिए।

(२) **नोट** - सिद्धाणं पद में सि ह्रस्व है, क्योंकि व्याकरण में संयुक्त अक्षर के पूर्व वर्ण पर स्वराघात न हो तो छन्द शास्त्रों में उसे ह्रस्व मानते हैं।

प्रश्न २० - णमोकार मंत्र के अंतिम पद में - "लोए सव्व" शब्द से क्या तात्पर्य है ?

प्रज्ञाश्रमण मुनि

उत्तर - णमोकार मंत्र के अंतिम पद में "लोए सव्व" शब्द अन्त दीपक है, जो ऊपर के सभी पदों के साथ लगेगा जैसे - " णमो लोए सव्व अरिहंताणं" लोक के सब अरिहंतों को नमस्कार हो ।

पावन - परमेष्ठी

प्रश्न १ - अरिहंत परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर - १. जो वीतरागी; सर्वज्ञ एवं हितोपदेशी हों तथा जिनके चार घातिया (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणी, मोहनीय एवं अन्तराय) कर्म नष्ट हो गये हैं और चार गुण (अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य) प्रकट हो गये हैं, उन्हें अरिहन्त परमेष्ठी कहते हैं ।

२. अरि अर्थात् शत्रु (काम, क्रोध, मद, लोभ आदि) हन्ता अर्थात् हनन करने वाले, जिन्होंने पाप कर्म-रूपी शत्रुओं को नष्ट किया है, जो ४६ मूलगुणों से युक्त हैं, उन्हें अरिहंत कहते हैं ।

प्रश्न २ - वीतरागी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिनके अठारह दोष नहीं हैं, उन्हें वीतरागी कहते हैं ।

प्रश्न ३ - अठारह दोष कौन - कौन से हैं ?

उत्तर - छन्द -

क्षुधा-तृषा-भय-जन्म-जरा-मृति,रोग-शोक-रति-अरति महा ।
विस्मय - खेद - स्वेद - मद - निद्रा, राग - द्वेष - मिल मोह दहा ।

अर्थः -(१) क्षुधा (भूख); (२) तृषा (प्यास); (३) भय; (४) जन्म; (५) बुढ़ापा; (६) मरण; (७) रोग; (८) शोक; (९) रति;

अरति; (१०) अरति; (११) विस्मय (आश्चर्य); (१२) खेद; (१३) स्वेद (पसीना); (१४) मद (घमण्ड); (१५) निद्रा; (१६) राग; (१७) द्वेष; (१८) मोह ।

प्रश्न ४ - सर्वज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो संसार के समस्त द्रव्यों की; भूत, भविष्य एवं वर्तमान की समस्त पर्यायों को एक साथ दर्पण के समान जानें, उन्हें सर्वज्ञ कहते हैं ।

प्रश्न ५ - हितोपदेशी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिनका उपदेश; प्राणी मात्र का हित (कल्याण) करने वाला हो, उन्हें हितोपदेशी कहते हैं ।

प्रश्न ६ - हितोपदेश किस भाषा में होता है ?

उत्तर - अठारह महाभाषा एवं सात-सौ लघु भाषा में हितोपदेश होता है ।

प्रश्न ७ - अरिहंतों के कितने मूलगुण होते हैं ?

उत्तर - छन्द - **चवतीसों अतिशय सहित, प्रातिहार्य पुनि आठ ।**
अनन्त चतुष्टय गुण सहित, ये छ्यालीसों पाठ।।

अरिहंतों के ४६ मूलगुण होते हैं ।

३४ अतिशय; ८ प्रातिहार्य; ४ अनन्त चतुष्टय ।

प्रश्न ८ - ३४ अतिशय कौन - कौन से हैं ?

उत्तर - जन्म के १० अतिशय; केवलज्ञान के १० अतिशय; देवकृत १४ अतिशय ।

प्रश्न ९ - जन्म के १० अतिशय कौन - कौनसे हैं ?

उत्तर - छन्द - **अतिशय रूप सुगंध तन, नाहिं पसेव निहार ।**
प्रियहितवचन अतुल्यबल, रुधिर श्वेत आकार।।
लच्छन सहस रु आठ तन, समचतुष्क संठान ।
वज्रवृषभनाराचजुत, ये जनमत दश जान ।।

(१) अत्यन्त सुन्दर रूप; (२) सुगंधित शरीर; (३) पसीना नहीं आना; (४) निहार (मूल - मूत्र) नहीं होना; (५) हित - मित - प्रिय वचन; (६) अतुल्य बल; (७) दूध के समान सफेद खून; (८) शरीर में १००८ शुभ चिन्हों को होना ; (९) समचतुस्त्र संस्थान; (१०) वज्रवृषभ नाराच संहनन ।

प्रश्न १० - केवलज्ञान के १० अतिशय कौन - कौन से हैं ?

उत्तर - योजन शत इक में सुभिख, गगन गमन मुखचार ।
नहिं अदया उपसर्ग नहीं, नाहीं कवलाहार ।।
सब विद्या - ईश्वरपनो, नाहिं बढ़ैं नख - केश ।
अनिमिष-दृग छाया रहित, दशकेवल के वेश ।।

(१) १०० -१०० योजन में सुभिक्ष होना ।

(२) आकाश - गमन ।

(३) चतुर्मुख (एक ही शरीर चारों दिशाओं में दिखना) ।

(४) पूर्ण दया का होना ।

(५) उपसर्ग नहीं होना ।

(६) कवलाहार (ग्रासाहार) नहीं होना ।

(७) सब विद्याओं के ईश्वर होना ।

(८) नख (नाखून); केश (बाल) नहीं बढ़ना ।

(९) आँख की पलकों का नहीं झपकाना ।

(१०) शरीर की छाया (परछाई) नहीं पड़ना ।

प्रश्न ११ - देवों द्वारा किये जाने वाले १४ अतिशय कौन - से हैं ?

उत्तर - देवरचित हैं चारदश, अर्द्धमागधी भाष ।
आपस-माहीं मित्रता, निर्मलदिश आकाश ।।
होत फूल-फल ऋतु सबै, पृथिवी काँच समान ।
चरण कमल तल कमल है, नभतैं जय-जयवान ।।

मन्द सुगंध बयारि पुनि, गंधोदक की वृष्टि ।
भूमिविषै कण्टक नहीं, हर्षमयी सब सृष्टि ।।
धर्मचक्र आगें रहै, पुनि वसु-मंगल सार ।
अतिशय श्रीअरहंत के, ये चौंतीस प्रकार ।।

(१) अर्द्धमागधी भाषा; (२) परस्पर मित्रता; (३) दशों दिशाओं की निर्मलता; (४) आकाश की निर्मलता; (५) छहों ऋतु के फल - फूल एक साथ फलना; (६) दर्पण के समान पृथ्वी की होना; (७) स्वर्णमयी कमलों की रचना (भगवान के बिहार में देवों द्वारा उनके चरणों के नीचे २२५ कमलों की रचना); (८) देवों द्वारा आकाश में जयध्वनि; (९) शीतल मंद-सुगंध पवन चलना; (१०) सुगंधित जल वृष्टि होना; (११) भूमि कंटक रहित होना; (१२) समस्त जीवों को आनन्दमयी होना; (१३) धर्मचक्र आगे - आगे चलना; (१४) अष्ट मंगल-द्रव्यों का होना; ये चौदह देवकृत अतिशय हैं । इस प्रकार जन्म के दश, केवलज्ञान के दश तथा देवकृत चौदह; ये चौंतीस अतिशय हैं ।

प्रश्न १२ - अष्ट मंगल-द्रव्य कौन - से हैं ?

उत्तर - (१) छत्र; (२) चंवर; (३) घंटा; (४) कलश - झारी; (५) ध्वजा; (६) पंखा; (७) स्वस्तिक; (८) दर्पण ।

प्रश्न १३ - आठ प्रातिहार्य कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द -

तरु अशोक के निकट में सिंहासन छविदार ।
तीनछत्र सिरपर लसैं, भामण्डल पिछवार ।।
दिव्यध्वनि मुखतैं खिरै, पुष्पवृष्टि सुर होय ।
ढोरें चौसटि चमर जख (यक्ष), बाजैं दुन्दुभि जोय।।

(१) अशोक वृक्ष; (२) सिंहासन; (३) तीन छत्र; (४) भामण्डल; (५) दिव्यध्वनि; (६) पुष्पवृष्टि; (७) चौंसठ-चंवर; (८) दुन्दुभि बाजे ।

प्रश्न १४ - अष्ट मंगल-द्रव्य एवं अष्ट प्रातिहार्य में क्या अन्तर है ?

उत्तर - अष्ट मंगल द्रव्य; देवों द्वारा किया जाने वाला अतिशय है तथा अष्ट प्रतिहार्य; अन्तराय कर्म के क्षय से अशोक वृक्ष, सिंहासन आदि मिलते हैं ।

प्रश्न १५ - अनन्त चतुष्टय कौन-से हैं ?

उत्तर - छन्द -

ज्ञान-अनंत अनंत-सुख, दरस-अनंत प्रमान ।
बल-अनंत अरहंत सो, इष्टदेव पहिचान ।।

(१) अनन्त दर्शन; (२) अनन्त ज्ञान; (३) अनन्त सुख; (४) अनन्त वीर्य ।

प्रश्न १६ - सिद्ध परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिनके आठ कर्म नष्ट होने से आठ मूलगुण प्रकट हो गये हैं, उन्हें सिद्ध परमेष्ठी कहते हैं ।

प्रश्न १७ - कौन - सा कर्म नष्ट होने से; कौन - सा मूलगुण प्रगट हुआ है ?

उत्तर - छन्द -

समकित दरसन ज्ञान, अगुरुलघु अवगाहना ।
सूच्छम वीरजवान, निराबाध गुण सिद्ध के।।

ज्ञानावरणी के नष्ट होने से अनन्त ज्ञान ।
दर्शनावरणी के नष्ट होने से अनन्त दर्शन ।

वेदनीय के नष्ट होने से अव्यावाधत्व ।
मोहनीय के नष्ट होने से सम्यक्त्व (सुख) ।
आयु के नष्ट होने से अवगाहनत्व ।
नाम के नष्ट होने से सूक्ष्मत्व ।
गोत्र के नष्ट होने से अगुरुलघुत्व ।
अन्तराय के नष्ट होने से अनन्त वीर्यत्व ।

प्रश्न १८ - अरिहंतों के चार ही कर्म नष्ट हुए हैं; सिद्धों के आठों ही कर्म नष्ट हो गए हैं, अतः सिद्ध बड़े हैं फिर णमोकार मंत्र में अरिहंतों को पहले नमस्कार क्यों किया गया है ?

उत्तर - संसारी जीवों को आत्मा से परमात्मा बनने का मार्ग अरिहंत ही बतलाते हैं, अतः सर्व हितकारी होने से अरिहंतों को पहले नमस्कार किया है ।

प्रश्न १९ - आचार्य परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो शिष्यों को शिक्षा - दीक्षा एवं प्रायश्चित देते हैं तथा स्वयं छत्तीस मूलगुण पालन करते हैं, उन्हें आचार्य परमेष्ठी कहते हैं ।

प्रश्न २० - आचार्य परमेष्ठी के छत्तीस मूलगुण कौन-से हैं ?

उत्तर - छन्द -

द्वादश तप दश धर्मजुत, पालैं पंचाचार ।
षट् आवशि त्रयगुप्ति गुन, आचारज पद सार ॥

बारह तप, दश धर्म, पंचाचार, छह आवश्यक एवं तीन गुप्ति; ये छत्तीस मूलगुण आचार्य परमेष्ठी के होते हैं ।

प्रश्न २१ - बारह तप कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द -

अनशन ऊनोदर करैं, व्रतसंख्या रस छोर ।
विविक्तशयनासन धरैं, काय कलेश सुठोर ॥

प्रायश्चित धर विनयजुत, वैयाव्रत स्वाध्याय ।
पुनि उत्सर्ग विचारकैं, धरैं ध्यान मन लाय ।।

(१) अनशन; (२) अमौदर्य; (३) व्रत परिसंख्यान; (४) रस परित्याग; (५) विविक्त शय्याशन; (६) काय क्लेश; (७) प्रायश्चित्त; (८) विनय; (९) वैय्यावृत्य; (१०) स्वाध्याय; (११) व्युत्सर्ग; (१२) ध्यान; ये १२ तप के भेद हैं ।

प्रश्न २२ - दस धर्म कौन-से हैं ?

उत्तर - छन्द -

छिमा मारदव आरजव, सत्यवचन चितपाग ।
संजम तप त्यागी सरब, आकिञ्चन तियत्याग ।

(१) उत्तम क्षमा; (२) उत्तम मार्दव; (३) उत्तम आर्जव; (४) चितपाग - उत्तम शौच; (५) उत्तम सत्य; (६) उत्तम संयम; (७) उत्तम तप; (८) उत्तम त्याग; (९) उत्तम आकिञ्चन; (१०) उत्तम ब्रह्मचर्य ।

प्रश्न २३ - पंचाचार कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द -

दर्शन ज्ञान चरित्र तप, वीरज पंचाचार ।
गोपै मन-वच-काय को, गिन छत्तीस गुन सार ।।

(१) दर्शनाचार; (२) ज्ञानाचार; (३) चारित्राचार; (४) तपाचार; (५) वीर्याचार । इस प्रकार १२ तप; १० धर्म; ५ पंचाचार; ६ आवश्यक एवं ३ गुप्ति; ये सब छत्तीस मूलगुण आचार्य परमेष्ठी के हैं ।

प्रश्न २४ - साधु एवं आचार्य जी के छह आवश्यक कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द - **समता धर वन्दन करै, नाना थुती बनाय ।**
प्रतिक्रमण स्वाध्याय जुत, कायोत्सर्ग लगाय ।।

(१) समता; (२) वन्दना; (३) स्तुति; (४) प्रतिक्रमण;
(५) प्रत्याख्यान; (६) कायोत्सर्ग ।

प्रश्न २५ - तीन गुप्ति कौन - सी हैं ?

उत्तर - (१) मनोगुप्ति; (२) वचनगुप्ति; (३) कायगुप्ति ।

प्रश्न २६ - उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो साधु-संघ में स्वयं अधिक अध्ययन शील हों तथा अन्य साधुओं को भी अध्ययन कराते हों । स्व-समय अर्थात् जैन सिद्धान्त, पर-समय अर्थात् अन्यधर्म के ज्ञाता होते हैं तथा इनके (११ अंग, १४ पूर्व) २५ मूल गुण होते हैं ।

प्रश्न २७ - ११ अंग कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द -

प्रथमहिं आचारांग गनि, दूजौ सूत्रकृतांग ।
ठाणअंग तीजौ सुभग, चौथो समवायांग ।।
व्याख्यापण्णति पाँचमौं, ज्ञातृकथा षट् जान ।
पुनि उपासकाध्ययन है, अंतःकृतदश ठान ।।
अनुत्तरण उत्पाद दश, सूत्रविपाक पिछान ।
बहुरि प्रश्नव्याकरण जुत, ग्यारह अंग प्रमान ।।

(१) आचारांग; (२) सूत्रकृतांग; (३) स्थानांग; (४) समवायांग, (५) व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग; (६) ज्ञातृ कथांग; (७) उपासकाध्ययनांग; (८) अन्तकृद्दशांग; (९) अनुत्तरोपपादिक-दशांग; (१०) प्रश्नव्याकरणांग; (११) विपाक सूत्रांग ।

प्रश्न २८ - १४ पूर्वों के नाम क्या हैं ?

उत्तर - छन्द -

उत्पादपूर्व अग्रायणी, तीजो वीरजवाद ।
अस्ति-नास्तिपरवाद पुनि, पंचम ज्ञानप्रवाद।।

छट्ठौ कर्मप्रवाह है, सतप्रवाद पहिचान ।
अष्टम आत्मप्रवाद पुनि, नवमौं प्रत्याख्यान ॥
विद्यानुवाद पूरव दशम, पूर्व कल्याण महन्त ।
प्राणवाद किरियाबहुल, लोकबिन्दु है अन्त ॥

(१) उत्पाद पूर्व; (२) आग्रायणी पूर्व; (३) वीर्यानुवाद पूर्व; (४) अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व; (५) ज्ञान प्रवाद पूर्व; (६) सत्य प्रवाद पूर्व; (७) आत्मा प्रवाद पूर्व; (८) कर्म प्रवाद पूर्व; (९) प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व; (१०) विद्यानुवाद पूर्व; (११) कल्याणवादपूर्व; (१२) प्राणवाद पूर्व; (१३) क्रिया विशाल पूर्व; (१४) लोक बिन्दुसार पूर्व ।

प्रश्न २९ - साधु-परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो विषय - आशाओं से रहित, आरम्भ - परिग्रह से रहित तथा ज्ञान - ध्यान - तप में लीन रहते हुए; २८ मूलगुणों का पालन करते हैं, वे साधु परमेष्ठी कहलाते हैं ।

प्रश्न ३० - साधु परमेष्ठी के २८ मूलगुण कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द -

पंच महाव्रत समिति पन, पंच इन्द्रिय जयचीस ।
छह आवश्यक सात गुण, ये सब हैं अठबीस ॥

५ महाव्रत; ५ समिति; ५ इन्द्रिय निरोध; ६ आवश्यक; ७ विशेष गुण, ये २८ मूलगुण हैं ।

प्रश्न ३१ - ५ महाव्रत; ५ समिति कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द - **५ महाव्रत -**

हिंसा अनृत तसकरी, अब्रह्म परिग्रह पाय ।
मन-वच-तनतैं त्यागवी, पंच महाव्रत थाय ।

(१) अहिंसा महाव्रत; (२) सत्य महाव्रत; (३) अचौर्य महाव्रत;

(४) ब्रह्मचर्य महाव्रत; (५) अपरिग्रह महाव्रत ।

छन्द - **५ समिति -**

ईर्या भाषा एषणा, पुनि क्षेपण आदान ।
प्रतिष्ठाना - जुत क्रिया, पाँचौं समिति विधान ॥

(१) ईर्या समिति; (२) भाषा समिति; (३) एषणा समिति; (४) आदान-निक्षेपण समिति; (५) प्रतिष्ठापन समिति ।

प्रश्न ३२ -५ इन्द्रिय निरोध एवं छह आवश्यक कौन - से हैं ?

उत्तर - (१) स्पर्शन; (२) रसना; (३) घ्राण; (४) चक्षु; (५) कर्ण । इन पाँचों इन्द्रियों को बस में करना पंचेन्द्रिय निरोध है । ६ आवश्यक - (छन्द; आचार्य परमेष्ठी के मूलगुणों से याद कर लें) (१) समता; (२) वन्दना; (३) स्तुति; (४) स्वाध्याय; (५) प्रतिक्रमण; (६) कायोत्सर्ग ।

प्रश्न ३३ - सात विशेष गुण कौन - से हैं ?

उत्तर - छन्द -

तज मंजन भूमि शयन, कर स्नान का त्याग ।
केश - लोंच कर नग्न रह, इक अहार कर पात्र ।

(१) मंजन त्याग; (२) भूमि शयन; (३) स्नान त्याग; (४) केशलोंच; (५) नग्न रहना; (६) दिन में एकबार आहार; (७) खड़े होकर हाथ में आहार।

प्रश्न ३४ - पाँचों परमेष्ठियों के कुल कितने मूलगुण हैं ?

उत्तर - पाँचों परमेष्ठियों के कुल १४३ मूलगुण हैं ।

प्रश्न ३५ - क्या हम लोग भी परमेष्ठी बन सकते हैं ?

उत्तर - हाँ; जो भी इन परमेष्ठियों के समान उत्तम कार्य करेगा वह परमेष्ठी बन सकता है ।

प्रश्न ३६ - वर्तमान में साक्षात् कितने परमेष्ठी के दर्शन होते हैं ?

उत्तर - वर्तमान में साक्षात् आचार्य, उपाध्याय, साधु; इन तीन परमेष्ठियों के दर्शन होते हैं।

प्रश्न ३७ - आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी आहार कैसे करते हैं ?

उत्तर - ये तीनों परमेष्ठी दिन में एक बार, खड़े - खड़े, हाथों में ही शुद्ध - प्रासुक आहार करते हैं।

प्रश्न ३८ - आचार्य, उपाध्याय, साधु परमेष्ठी अपने पास धन पैसा नहीं रखते हैं तो उनके बाल बढ़ जाने पर क्या करते हैं ?

उत्तर - बालों के बढ़ जाने पर; ये तीनों परमेष्ठी अपने हाथों से सिर, दाढ़ी, मूँछ के बाल; कंडे की राख लगाकर निकालते हैं, इस क्रिया को केशलोंच कहते हैं।

प्रश्न ३९ - केशलोंच में कंडे की राख क्यों लगाते हैं ?

उत्तर - केशलोंच करते समय सिर, दाढ़ी, मूँछ में तथा हाथों में पसीना आता है, जिससे बाल सही तरीके नहीं निकल पाते, अतः कंडे की राख लगाने से पसीना सूख जाता है और केशलोंच सही होते हैं।

तीर्थङ्कर - अवस्था

प्रश्न १ - तीर्थङ्कर आदिनाथ जी के पहले भी क्या कोई तीर्थंङ्कर थे, यदि थे तो उनके नाम बताओ ?

उत्तर - तीर्थंङ्कर आदिनाथ जी के पहले भी २४ तीर्थङ्कर थे -

(१) निर्वाण जी	(९) अङ्गिर जी	(१७) विमलेश्वर जी
(२) सागर जी	(१०) सन्मति जी	(१८) यशोधर जी
(३) महासाधु जी	(११) सिंधु जी	(१९) कृष्णमति जी
(४) विमल प्रभ जी	(१२) कुसुमाञ्जलि जी	(२०) ज्ञानमति जी
(५) श्रीधर जी	(१३) शिवगण जी	(२१) शुद्धमति जी
(६) सुदत्त जी	(१४) उत्साह जी	(२२) श्री भद्र जी
(७) अमल प्रभ जी	(१५) ज्ञानेश्वर जी	(२३) अतिक्रान्त जी
(८) उद्धर प्रभ जी	(१६) परमेश्वर जी	(२४) शान्ता जी ।

प्रश्न २ - तीर्थङ्कर महावीर के बाद भी भविष्य में क्या कोई तीर्थङ्कर बनेंगे, यदि बनेंगे तो उनका नाम बताओ ?

उत्तर - तीर्थङ्कर महावीर के मोक्ष जाने से ८४ हजार वर्ष बाद पुनः २४ तीर्थङ्कर बनेंगे -

१. महापद्म जी, २. सुरदेव जी, ३. सुपार्श्व जी, ४. स्वयं प्रभ जी ५. सर्वात्मभूत जी, ६. देव पुत्र जी, ७. कुल पुत्र जी, ८. उदंक जी, ९. प्रौष्ठिल जी, १०. जयकीर्ति जी , ११. मुनिसुव्रत जी, १२. अर जी (अमम), १३. निष्पाप जी, १४. निष्कषाय जी, १५. विपुल जी, १६. निर्मल जी, १७. चित्रगुप्त जी, १८. समाधि गुप्त जी, १९. स्वयंभू जी, २०. अनिवृत्तिक जी, २१. जय जी, २२. विमल जी, २३. देवपाल जी, २४. अनन्त वीर्य जी ।

प्रश्न ३ - क्या तीर्थङ्कर हमेशा २४ - २४ ही होते हैं ?

उत्तर - नहीं; भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में चौबीस - चौबीस तीर्थङ्कर होते हैं तथा विदेह क्षेत्र में हमेशा बीस तीर्थङ्कर होते हैं ।

प्रश्न ४ - विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों के नाम बताओ ?

उत्तर - १. सीमन्धर; २. युग्मन्धर; ३. बाहु; ४. सुबाहु; ५. सुजात; ६. स्वयं प्रभ; ७. वृषभानन; ८. अनन्त वीर्य; ९. सूरि प्रभ; १०. विशाल कीर्ति; ११. वज्रधर; १२. चन्द्रानन; १३. भद्रबाहु; १४. भुजंगम; १५. ईश्वर; १६. नेम प्रभ; १७. वीरसेन; १८. महाभद्र; १९. देवयश; २०. अजित वीर्य; ।

प्रश्न ५ - तीर्थङ्कर कैसे बनते हैं ?

उत्तर - कोई भव्य सम्यग्दृष्टि जीव; तीर्थङ्कर, केवलि या श्रुत केवलि के पाद मूल में दर्शन विशुद्धि आदि सोलह कारण भावना को भाता है, तब उसे तीर्थङ्कर नामकर्म की सातिशय पुण्य प्रकृति का बंध होता है, पुनः वह तीर्थङ्कर नाम कर्म की प्रकृति जब उदय में आती है, तब उस जीव के द्वारा धर्मतीर्थ का प्रवर्तन होता है और वह धर्मतीर्थ का प्रवर्तक जीव; तीर्थङ्कर कहलाता है ।

प्रश्न ६ - तीर्थङ्करों के चिन्हकरण कैसे किया जाता है ?

उत्तर - तीर्थङ्करों के जन्म कल्याणक के समय जब सौधर्मेन्द्र; बाल तीर्थङ्करों को जन्माभिषेक हेतु सुमेरु पर्वत पर ले जाता है, तब उन तीर्थङ्करों के जन्म से ही उनके शरीर पर १००८ जो शुभ चिन्ह होते हैं । उनमें से जो चिन्ह उन तीर्थङ्करों के दाहिने पैर के अंगूठे में होता है, यह चिन्ह उन तीर्थङ्कर का है ऐसा सौधर्मेन्द्र घोषित करता है ।

प्रश्न ७ - तीर्थङ्करों के चिन्हों से क्या कोई पूर्व भव से सम्बन्ध है ? जैसे - पार्श्वनाथ के नाग - नागिन से एवं महावीर स्वामी का सिंह पर्याय से ।

उत्तर - तीर्थङ्करों के चिन्हों का उनके पूर्व जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं हैं, क्योंकि कितने ही तीर्थङ्करों के चिन्ह स्वस्तिक, वज्रदण्ड, कलश आदि अजीव - अचेतन हैं ।

प्रश्न ८ - कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिन जीवों का गर्भ - जन्म आदि भी; संसार के दुःखी जीवों को सुख-शान्ति एवं पुण्य का हेतु होता है, उसे कल्याणक कहते हैं ।

प्रश्न ९ - कल्याणक कितने होते हैं, नाम बताइये ?

उत्तर - कल्याणक पाँच होते हैं -

१. गर्भकल्याणक; २. जन्म कल्याणक; ३. तप कल्याणक; ४. ज्ञान कल्याणक; ५. मोक्ष कल्याणक ।

प्रश्न १० - गर्भ कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिन तीर्थङ्कर के गर्भ में आने से पहले ही; जन्म नगरी में छह माह पहले से ही प्रतिदिन ५६ करोड़ रत्न बरसते हैं । तीर्थङ्कर को जन्म देने वाली माता की सेवा स्वर्ग की देवियाँ करती हैं तथा माता सोलह शुभ स्वप्न देखती है, यह सब पुण्यवर्द्धक कार्य गर्भ कल्याणक कहलाता है ।

प्रश्न ११ - सोलह शुभ स्वप्न के नाम बताओ ?

उत्तर - १. ऐरावत हाथी; २. सिंह; ३. बैल; ४. कलश करती हुई लक्ष्मी; ५. दो मालायें; ६. उगता सूर्य; ७. चन्द्रमा; ८. मीन (मछली) का जोड़ा; ९. दो पूर्ण कलश; १०. कमल युक्त सरोवर; ११. समुद्र; १२. सिंहासन; १३. देव विमान; १४. धरणेन्द्र विमान; १५. रत्न राशि; १६. निर्धूम अग्नि ।

प्रश्न १२ - जन्म कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिन तीर्थङ्कर के जन्म होने पर स्वर्ग लोक में अनहद - नाद होने लगता है । एक क्षण के लिए तीनों लोकों में सुख-शान्ति का प्रसार होता है । सौधर्मेन्द्र; अपनी शची (प्रमुख्य देवी) के साथ बाल तीर्थङ्कर का अनेक देवों से सहयोग से सुमेरु पर्वत पर सुगन्धित द्रव्यों से अभिषेक करता है एवं सातिशय पुण्यवृद्धि का हेतु आश्चर्यकारी ताण्डव नृत्य करता है, इसे जन्म कल्याणक कहते हैं ।

प्रश्न १३ - तप कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिन तीर्थङ्करों को संसार - शरीर - भोगों से विरक्ति होने पर; बारह भावनाओं के चिन्तन करते हुए वैराग्य दशा में जो लौकान्तिक देवों के द्वारा तीर्थङ्करों की भक्ति - पूजा कर सातिशय पुण्य का संचय करते हैं । तीर्थङ्कर के तप ग्रहण करने पर; अनेक भव्य जीव तप ग्रहण करते हैं, यह तप कल्याणक कहलाता है ।

प्रश्न १४ - ज्ञान कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिन तीर्थङ्करों को केवलज्ञान उत्पन्न होने पर; जो देवों द्वारा समवशरण आदि की रचना कर इन तीर्थङ्करों की पूजा की जाती है । जिनकी दिव्यध्यनि सुनकर अनेकानेक भव्य जीव; मुक्ति प्राप्त करते हैं, जिनका ज्ञान; अनेक भव्य जीवों का कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है, यह ज्ञान कल्याणक कहलाता है ।

प्रश्न १५ - मोक्ष (निर्वाण) कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिन तीर्थङ्करों के समस्त कर्म नष्ट होने पर; उनका परमौदारिक शरीर कर्पूर की तरह उड़ जाता है और उनकी विशुद्ध आत्मा;

सिद्धावस्था को प्राप्त हो जाती है । उस समय जो देवेन्द्र आदि के द्वारा जो भक्ति पूर्वक पूजा की जाती है, उसे मोक्ष (निर्वाण) कल्याण कहते हैं ।

प्रश्न १६ - क्या सभी तीर्थङ्करों के पाँच कल्याणक होते हैं ?

उत्तर - नहीं; जो भव्य जीव; विदेह क्षेत्र में तीर्थङ्कर प्रकृति का बन्ध मुनि अवस्था में करके उसी भव से मोक्ष जाते हैं, उनके ज्ञान और निर्वाण; ये दो कल्याणक होते हैं तथा गृह - अवस्था में जो तीर्थङ्कर कर्मप्रकृति का बंध करके; उसी भव से मोक्ष जाते हैं, उनके तप, ज्ञान और निर्वाण; ये तीन कल्याणक होते हैं तथा पूर्व भव से तीर्थङ्कर कर्मप्रकृति के बंध वाले जीवों के पाँचों कल्याणक होते हैं । भरत एवं ऐरावत क्षेत्र के तीर्थङ्करों के पाँचों ही कल्याणक होते हैं ।

प्रश्न १७ - तीर्थङ्कर और अरिहंत में क्या अन्तर है ?

उत्तर -

अन्तर	अरिहंत	तीर्थङ्कर
संख्या - -	बहुत होते हैं ।	भरत, ऐरावत क्षेत्र में २४ - २४, पाँच विदेह क्षेत्रों में २० होते हैं ।
कल्याणक -	कल्याणक का नियम नहीं है ।	भरत, ऐरावत क्षेत्र में ५ - ५, विदेह क्षेत्र में २ -३ -५ ।
४६ मूलगुण -	पूर्ण होने का नियम नहीं हैं।	पाँच कल्याणक वालों के पूर्ण ४६ मूलगुण होते हैं ।
समवशरण -	समवशरण का नियम नहीं, गंध कुटी होती है।	इनके समवशरण होता है ।

दिव्यध्वनि -	दिव्यध्वनि खिरने का नियम नहीं ।	इनकी दिव्यध्वनि नियम से चार बार खिरती है ।
विशेषता -	जितने अरिहंत हैं; वे सब तीर्थङ्कर नहीं होते हैं । अरिहंत को केवली भी कहते हैं । इन्द्र द्वारा पूजा का नियम नहीं हैं । श्री वत्स चिन्ह का नियम नहीं है ।	जितने तीर्थङ्कर हैं; वे सब अरिहंत हैं, तीर्थङ्कर को स्वयंभू भी कहते हैं। तीर्थङ्कर १०० इन्द्रों से पूज्यनीय हैं । श्री वत्स चिन्ह का नियम है ।

प्रश्न १८ - बाहुबली भगवान का नाम तीर्थङ्करों में क्यों नहीं है ?

उत्तर - बाहुबली स्वामी ने तपस्या करके केवलज्ञान प्राप्त किया था, अतः वे भगवान हैं, लेकिन तीर्थङ्कर नामकर्म प्रकृति न तो बन्ध था; न उदय, अतः वे तीर्थङ्कर नहीं हैं ।

प्रश्न १९ - सम्पूर्ण अढ़ाई द्वीप में एक - साथ कितने तीर्थङ्कर हो सकते हैं ?

उत्तर - सम्पूर्ण अढ़ाई द्वीप में एक साथ १७० तीर्थङ्कर हो सकते हैं ।

द्रव्य - व्यवस्था

प्रश्न १ - द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं ।

प्रश्न २ - सामान्य से द्रव्य कितने हैं ?

उत्तर - सामान्य से द्रव्य छः हैं -

१. जीव; २. पुद्गल; ३. धर्म; ४. अधर्म; ५. आकाश; ६. काल ।

प्रश्न ३ - जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - जीव के दो भेद हैं - १. संसारी; २. मुक्त ।

प्रश्न ४ - संसारी एवं मुक्त जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो कर्म सहित जीव हैं; वे संसारी एवं जो कर्म रहित हैं; वे मुक्त जीव हैं ।

प्रश्न ५ - संसारी जीव को भेद सहित समझाइये ?

उत्तर - संसारी जीव के दो भेद हैं - १. त्रस; २. स्थावर जिन के त्रसनाम कार्य का उदय है; वे त्रस । जिनके स्थावर नाम कर्म का उदय है; वे स्थावर हैं ।

प्रश्न ६ - त्रस एवं स्थावर जीव को भेद सहित समझाओ ?

उत्तर - त्रस जीव के दो भेद हैं - १. विकलेन्द्रिय; २. सकलेन्द्रिय

स्थावर जीव के पाँच भेद हैं -

१. पृथ्वी; २. जल; ३. अग्नि; ४. वायु; ५. वनस्पति ।

प्रश्न ७ - विकलेन्द्रिय एवं सकलेन्द्रिय को भेद सहित समझाये ?

उत्तर - दो इन्द्रिय; तीन इन्द्रिय; चार इन्द्रिय; ये तीन विकलेन्द्रिय हैं ।

सैनी एवं असैनी; ये दो भेद सकलेन्द्रिय हैं ।

प्रश्न ८ - सैनी एवं असैनी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो जीव मन सहित हों; वे सैनी । जो जीव मन रहित हों; वे असैनी कहलाते हैं ।

प्रश्न ९ - पृथ्वीकायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर - पृथ्वी ही जिनका शरीर है; वह जीव पृथ्वीकायिक है । जैसे - सोना, चाँदी, हीरा - पन्ना, पत्थर - मिट्टी आदि ।

प्रश्न १० - जलकायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर - जल ही जिनका शरीर है; वह जीव जलकायिक है । जैसे - नदी, तालाब आदि का जल, ओस, ओला आदि ।

प्रश्न ११ -अग्निकायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर - अग्नि ही जिनका शरीर है; वह जीव अग्निकायिक है । जैसे - कोयले की अग्नि, गैस की अग्नि आदि ।

प्रश्न १२ - वायुकायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर - वायु ही जिनका शरीर है; वह जीव वायुकायिक है । जैसे - आँधी - तूफान, चलती हुई हवा आदि ।

प्रश्न १३ - वनस्पतिकायिक किसे कहते हैं ?

उत्तर - वनस्पति ही जिनका शरीर है; वह जीव वनस्पतिकायिक है । जैसे - आम, केला, बड़, पीतल, नीम आदि के वृक्ष ।

प्रश्न १४ - मुक्त जीव को भेद सहित समझाओ ?

उत्तर - मुक्त जीव के सकल परमात्मा एवं निकल परमात्मा; ये दो भेद हैं । जो शरीर सहित हैं, वे सकल परमात्मा (अरिहंत) । जो शरीर रहित हैं, वे निकल परमात्मा (सिद्ध) हैं ।

प्रश्न १५ - पुद्गल किसे कहते हैं ? भेद सहित समझाओ ?

उत्तर - जो स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाला हो उसे पुद्गल कहते हैं । पुद्गल के अणु एवं स्कन्ध; ये दो भेद होते हैं ।

प्रश्न १६ - अणु एवं स्कन्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर - पुद्गल के सबसे छोटे अंश (इकाई) को अणु कहते हैं। बहुत अणुओं के समुदाय को स्कन्ध कहते हैं।

प्रश्न १७ - धर्म द्रव्य किस कहते हैं ?

उत्तर - जो द्रव्य; चलते हुए जीव एवं पुद्गल को चलने में सहायक हो, उसे धर्म द्रव्य कहते हैं। जैसे - मछली के लिए जल।

प्रश्न १८ - अधर्म द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो द्रव्य; ठहरते हुए जीव एवं पुद्गल को ठहरने में सहायक हो, उसे अधर्म द्रव्य कहते हैं। जैसे - ठहरते हुए पथिक को वृक्ष की छाया।

प्रश्न १९ - आकाश द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - संसार के समस्त द्रव्यों को अवकाश देने में जो समर्थ हो; उसे आकाश द्रव्य कहते हैं।

प्रश्न २० - काल द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो संसार के समस्त द्रव्यों में परिवर्तन का कारण है, उसे काल द्रव्य कहते हैं।

पंचेन्द्रिय इन्द्रिय - विषय

प्रश्न १ - पाँचों इन्द्रियों के कौन - कौन से विषय हैं ?

उत्तर - स्पर्शन के - ८; हल्का - भारी, ठंडा - गरम , रूखा -चिकना, कड़ा - नरम। रसना के - ५; खट्टा, मीठा, चरपरा, कडुआ, कषायला। घ्राण के - २; सुगन्ध - दुर्गन्ध।
चक्षु के - ५; काला, नीला, पीला, लाल, सफेद।
कर्ण के - ७; सा, रे, ग, म, प, ध, नि आदि।

प्रश्न २ - किन जीवों की कितनी इन्द्रियाँ हैं ?

उत्तर - पंच स्थावर; एक इन्द्रिय (स्पर्शन)।
लट, केंचुआ; दो इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना)।
चींटी, खटमल; तीन इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण)।
मक्खी, मच्छर; चार इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु)।
हाथी, घोड़ा, आदमी; पाँच इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण)।

प्रश्न ३ - मन कौन-सी इन्द्रिय है ?

उत्तर - मन; अनिन्द्रिय है, इसका स्थान निश्चित नहीं है, अतः इसकी कोई इन्द्रिय नहीं है।

स्पर्शन में हाथी - हाथी; जब कामासक्त होता है, तब नकली हाथिनी के कारण गड्ढे में गिर जाता है जिससे पराधीन हो जाता है।

रसना में मछली - मछली; मछुआरे के द्वारा फेंके गये यन्त्र में लगे खाद्य को खाने से उसमें फंस जाती है।

घ्राण में भौंरा - भौंरा; सन्ध्या कालीन कमल पुष्प में सुगन्धी के कारण बन्द होकर प्राण खो देता है।

चक्षु में पतंगा - पतंगा; दीप की लौं से आकर्षित होकर, लौं से झुलसकर मर जाता है।

कर्ण में हिरण - हिरण; वीणा के स्वर की तान सुनकर रूक जाता है, जिससे बहेलिए उसे पकड़ लेते हैं।

चतुर्गति - दर्शन

प्रश्न १ - चारों गतियों को संक्षेप में परिभाषित करो ?

उत्तर - १. नरक गति - नरक गति नाम कर्म के उदय से जीव की अवस्था विशेष को नरक गति कहते हैं ।

२. तिर्यञ्च गति - तिर्यञ्च गति नाम कर्म के उदय से जीव की अवस्था विशेष को तिर्यञ्च गति कहते हैं ।

३. मनुष्य गति - मनुष्य गति नाम कर्म के उदय से जीव की अवस्था विशेष को मनुष्य गति कहते हैं ।

४. देव गति - देव गति नाम कर्म के उदय से जीव की अवस्था विशेष को देव गति कहते हैं ।

प्रश्न २ - नरक गति के दुःखों का संक्षिप्त से वर्णन करो ?

उत्तर - नरकों की भूमियों को स्पर्श करने मात्र से हजार बिच्छुओं के काटने से भी अधिक पीड़ा होती है । वहाँ की नदियाँ खून, पीपरूपी जल से तथा करोड़ों कीड़ों सहित शरीर में दाह उत्पन्न करने वाली हैं । वहाँ के सेमर वृक्षों के पत्ते; तलवार के समान गिरकर शरीर को काट देते हैं । शीत-उष्ण इतना है कि सुमेरु पर्वत भी गल जाए । वे नारकीय आपस में लड़कर एक दूसरे के शरीर के तिल - तिल के बराबर टुकड़े कर देते हैं । असुरकुमार जाति के देव भी आपस में नारकियों को लड़वाते हैं । वहाँ पर भूख - प्यास इतनी लगती है कि तीन लोक का अनाज एवं समस्त सागरों का पानी पीने को मिले तो भी वह शान्त नहीं होती है । यदि नरक का एक कण भी यहाँ आ जाये तो आठ मील के सभी जीव मर जायेंगे ।

प्रश्न ३ - तिर्यञ्च गति के दुःखों का संक्षेप से वर्णन करो ?

उत्तर - इस जीव का अनन्तकाल निगोद पर्याय में; एक श्वांस में अठारह बार - जन्म - मरण करते हुए साधारण शरीर वनस्पति काय में बीता । वहाँ से निकलकर पृथ्वी - जल, अग्नि, वायु एवं प्रत्येक वनस्पति हुआ, पुनः विकलेन्द्रिय पर्याय में बहुत दुःख उठाये, पंचेन्द्रिय असैनी होने से अज्ञानता का दुःख भोगा । सैनी पंचेन्द्रिय भी हुआ तो निर्बल जीवों की हिंसा करके पाप कमाया या स्वयं निर्बल हुआ तो सबल जीवों द्वारा मारकर खाया गया । जिन्दा रहा तो छेदन - भेदन, भूख - प्यास, सर्दी - गर्मी, भार ढोना, वध - बन्धन आदि दुःख सहन किए, जिन्हें करोड़ों जिह्वाओं द्वारा भी बतलाना कठिन है ।

प्रश्न ४ - मनुष्य गति के दुःखों का संक्षेप से वर्णन करो ?

उत्तर - यह जीव; मनुष्य गति में माता के उदर में नौ माह तक समस्त शरीर को सिकोड़कर रहा । पेट से जन्म लेने के बाद भी बीमारियाँ आदि के दुःखों को भोगा । बचपन में तत्त्व ज्ञान का अभ्यास नहीं नहीं किया, जवानी; धन-वैभव-स्त्री के साथ व्यर्थ गँवां दी, बुढ़ापा अर्धमृतक के समान हो जाता है ।

प्रश्न ५ - देव गति के दुःखों का संक्षेप से वर्णन करो ?

उत्तर - यह जीव; जब अनचाहे दुःखों को भोगकर भवनत्रिक देवों में उत्पन्न हुआ तो विषय चाहरूपी अग्नि से झुलसता रहा और मरते समय देवगति छूटने के दुःख से सन्तप्त रहा । यदि विमानवासी देव भी बन गया तो सम्यग्दर्शन के अभाव में दुःखों को भोगकर एकेन्द्रिय - स्थावर काय में जन्म लेता है ।

प्रश्न ६ - भवनत्रिक किसे कहते हैं ?

उत्तर - भवनवासी, व्यन्तर एवं ज्योतिष देवों को भवनत्रिक कहते हैं ।

प्रश्न ७ - विमानवासी किसे कहते हैं ?

उत्तर - सौधर्म स्वर्ग से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक के देव; विमानवासी कहलाते हैं ।

प्रश्न ८ - क्या सभी विमानवासी दुःख उठाते हैं ?

उत्तर - नहीं; सम्यक्त्व से रहित विमानवासी ही दुःख उठाते हैं ।

पाँच पाप - परिणाम

प्रश्न १ - पाँच पापों का संक्षेप में वर्णन करिये ?

उत्तर - १. हिंसा - किसी जीव को मारना, पीटना, दुःख देना - सताना, बुरे बोलना; हिंसा पाप है, जिससे नरक गति मिलती है । हिंसा में धन श्री प्रसिद्ध हुई ।

२. झूठ - सत्य बात को छुपाना या तोड़ - मरोड़कर कहना - जिससे दूसरों को प्राण दण्ड मिले इस अभिप्राय से प्रगट करना ही झूठ पाप है, जिससे कुगति मिलती है । झूठ में सत्यघोष प्रसिद्ध हुआ ।

३. चोरी - किसी की रखी - भूली - बिसरी वस्तु को बिना पूछे उठाकर छिपा देना चोरी पाप है, जिससे दुर्गति होती है । चोरी में तापस प्रसिद्ध हुआ ।

४. कुशील - दूसरों की माता - बहिन को गलत (बुरी) दृष्टि से देखना कुशील पाप है, जिससे बहुत पाप लगता है । कुशील में कोतवाल प्रसिद्ध हुआ ।

५. परिग्रह - स्व - पर वस्तु में मूर्च्छा आसक्तीभाव का होना परिग्रह पाप है । अधिक परिग्रह से नियम से नरक गति मिलती है । परिग्रह में श्मश्रु पण्डित प्रसिद्ध हुआ ।

कषाय - विशेष

प्रश्न १ - अनन्तानुबंधी कषाय किसे कहते हैं, भेद सहित बताइये ?

उत्तर - जो कषाय; छः महीने से अधिक समय तक आत्मा में रहती है, उसे अनन्तानुबंधी कषाय कहते हैं। यह कषाय मिथ्यादृष्टि जीव के होती है। इसके चार भेद हैं - अनन्तानुबंधी क्रोध - मान - माया - लोभ; ये क्रमशः पत्थर रेखा के समान, पत्थर के समान कठोर, बांस की जड़ के समान वक्र, क्रिमिरागमल के समान रंग वाली हैं।

प्रश्न २ - अप्रत्याख्यान कषाय किसे कहते हैं, भेद सहित बताइये ?

उत्तर - जो कषाय; छः महीने से कम समय तक आत्मा में रहती है, उसे अप्रत्याख्यान कषाय कहते हैं। यह कषाय अविरत सम्यग्दृष्टि जीव के होती है। इसके चार भेद हैं - अप्रत्याख्यान क्रोध - मान - माया - लोभ; ये क्रमशः भूमिरेखा के समान, हड्डी के समान कठोर, मेढ़े का सींग के समान वक्र, चक्रमल के समान रंग वाली हैं।

प्रश्न ३ - प्रत्याख्यान कषाय किसे कहते हैं, भेद सहित बताइये ?

उत्तर - जो कषाय; पन्द्रह दिन तक आत्मा में रहती है, उसे प्रत्याख्यान कषाय कहते हैं। यह कषाय देशव्रती के होती है। इसके चार भेद हैं - प्रत्याख्यान क्रोध - मान - माया - लोभ; ये क्रमशः धूली रेखा के समान, लकड़ी के समान कठोर, गोमूत्र रेखा के समान वक्र, शरीर मल के समान रंग वाली हैं।

प्रश्न ४ - संज्वलन कषाय किसे कहते हैं, भेद सहित बताइये ?

उत्तर - जो कषाय; ४८ मिनट के अन्दर तक आत्मा में रहती है, उसे

संज्वलन कषाय कहते हैं। यह कषाय महाव्रती (साधु) के होती है। इसके भी चार भेद हैं; संज्वलन क्रोध-मान-माया - लोभ; ये क्रमशः जल रेखा के समान, लता के समान नरम, खुरपी के समान वक्र, हल्दी के समान रंग वाली है।

प्रश्न ५ - नो कषाय किसे कहते हैं, भेद सहित बतलाइये?

उत्तर - जो कषाय; ऊपर की सभी कषायों के साथ अपना प्रभाव दिखाती है, वह नो कषाय है। यह कषाय प्रथम गुणस्थान से लेकर नौवें गुणस्थान तक अपना प्रभाव दिखाती है। इसके नौ भेद हैं - १. हास्य; २. रति; ३. अरति; ४. शोक; ५. भय; ६. जुगुप्सा; ७. स्त्री वेद; ८. पुरुष वेद; ९. नपुंसक वेद।

(चारों अप्रत्याख्यान कषायों की चार कथायें आदि पुराण से संकलित की हैं) राजा वज्रजंघ ने बड़े आश्चर्य के साथ उन मुनिराज से पूछा कि - ये नकुल, सिंह, वानर और शूकर चारों जीव; आपके मुख - कमल को देखने में दृष्टि लगाये हुये; इन मनुष्यों से भरे हुए स्थान में भी निर्भय होकर क्यों बैठे है?

इस प्रकार राजा के पूछने पर चारण ऋद्धि के धारक ऋषिराज बोले - हे राजन्! यह सिंह पूर्वभव में इसी देश के प्रसिद्ध हस्तिनापुर नामक नगर में सागरदत्त वैश्य से उसकी धनवती नामक स्त्री में उग्रसेन नामका पुत्र हुआ था।

वह उग्रसेन स्वभाव से ही अत्यन्त क्रोधी था, इसलिए उस अज्ञानी ने पृथिवी रेखा के समान अप्रत्याख्यानावरण क्रोध निमित्त से तिर्यञ्च आयु का बन्ध कर लिया था।

एक दिन उस दुष्ट ने राजा के भण्डार की रक्षा करने वाले लोगों को धुड़ककर वहाँ से बलपूर्वक बहुत - सी घी और चावल निकालकर वेश्याओं को दे दिया।

जब राजा ने यह समाचार सुना तब उसने उसे बँधवा कर थप्पड़, लात, घूँसा आदि की बहुत ही मार दिलायी; जिससे वह तीव्र वेदना सह - कर मरा और यहाँ यह सिंह हुआ है।

हे राजन् ! यह शूकर पूर्वभव में विजय नामक नगर में राजा महानन्द से उसकी रानी वसन्तसेना में हरिवाहन नामका पुत्र हुआ था। वह अप्रत्याख्यानावरण मान के उदय से हड्डी के समान मान को धारण करता था, इसलिए माता - पिता का भी विनय नहीं करता था और इसीलिए उसे तिर्यञ्च आयु का बन्ध हो गया था।

एक दिन यह माता - पिता का अनुशासन नहीं मानकर दौड़ा जा रहा था कि पत्थर के खम्भे से टकराकर उसका शिर फूट गया और इसी वेदना में आर्तध्यान से मरकर यह शूकर हुआ है।

हे राजन् ! यह वानर पूर्वभव में धन्यपुर नामके नगर में कुवेर नामक वणिक् के घर उसकी सुदत्ता नामकी स्त्री के गर्भ से नागदत्त नामका पुत्र हुआ था। वह भेंड़े के सींगके समान अप्रत्याख्यानावरण माया को धारण करता था।

एक दिन इसकी माता सुदत्ता; नागदत्त की छोटी बहन के विवाह के लिए अपनी दुकान से इच्छानुसार छाँट - छाँटकर कुछ सामान ले रही थी। नागदत्त उसे ठगना चाहता था, परन्तु किस प्रकार ठगना चाहिए ? इसका उपाय वह नहीं जानता था, इसलिए उसी उधेड़बुन में लगा रहा और अचानक आर्तध्यान से मरकर तिर्यञ्च आयु का बन्ध होने से यहाँ यह वानर अवस्था को प्राप्त हुआ है।

हे राजन् ! यह नकुल (नेवला) भी पूर्वभव में इसी

सुप्रतिष्ठित नगर से लोलुस नामका हलवाई था। वह धन का बड़ा लोभी था। किसी समय वहाँ का राजा जिनमन्दिर बनवा रहा था और उसके लिए वह मजदूरों से ईंटें बुलाता था। वह लोभी हलवाई; उन मजदूरों को कुछ पुआ वगैरह देकर उनसे छिपकर कुछ ईंटें अपने घर में डलवा लेता था। उन ईंटों के फोड़ने पर; उनमें - से कुछ में सुवर्ण निकला। यह देखकर इसका लोभ और भी बढ़ गया। उस सुवर्ण के लोभ से; उसने बार - बार मजदूरों को पुआ आदि देकर उनसे बहुत - सी ईंटें अपने घर में डलवा लीं।

एक समय वह किसी काम से घर से बाहर जा रहा था, अतः उसने पुत्र से कह दिया कि - हे पुत्र, तुम भी मजदूरों को कुछ भोजन देकर उनसे अपने घर ईंटें डलवा लेना। यह कहकर वह तो चला आया और पुत्र ने उसके कहे अनुसार घर पर ईंटें नहीं डलवायीं। जब वह दुष्ट लौटकर घर आया और पुत्र से पूछने पर जब उसे सब हाल मालूम हुआ। तब वह पुत्र से भारी कुपित हुआ।

उस मूर्ख ने लकड़ी तथा पत्थरों की मार से पुत्र का शिर फोड़ डाला और उस दुःख से दुःखी होकर अपने पैर भी काट डाले। अन्त में वह राजा के द्वारा मारा गया और मरकर इस नकुल पर्याय को प्राप्त हुआ है। वह हलवाई अप्रत्यख्यानावरण लोभ के उदय से ही इस दशा तक पहुँचा है।

इन कथाओं से हमें शिक्षा मिलती है कि कषाय करने वाले जीव कैसे अपना भव विगाड़ लेते हैं।

दर्शन स्तुति

प्रभो ! पतित पावन में अपावन , चरण आयो शरण जी ।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेटि जामन - मरण जी ॥ १ ॥
तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी ।
या बुद्धि सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी ॥ २ ॥
भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान धन मेरो हर्‍यो ।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्टगति धरतो फिर्‍यो ॥ ३ ॥
धन घड़ी यों धन दिवस योंहि, धन जनम मेरो भयो ।
अब भाग्य मेरे उदय आयो, दरश प्रभो ! जी को लख लयो ॥ ४ ॥
छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नाशा पै धरें ।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण युत, कोटि रवि - छवि को हरें ॥ ५ ॥
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो ।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो ॥ ६ ॥
मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीन हूँ तुव चरण जी ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोक पति जिन, सुनहुँ तारण - तरण जी ॥ ७ ॥
जाँचू नहीं सुरवास पुनि नर, राज परिजन साथ जी ।
"बुध" जाँच हूँ तव भक्ति भव - भव, दीजिये शिवनाथ जी ॥ ८ ॥